

[illegible]

दोषसिद्धिरदोषसिद्धिदोषसिद्धिदोषसिद्धि दोषसिद्धिमदोषसिद्धिदोषसिद्धिदोषसिद्धि
 दोषसिद्धिरदोषसिद्धिदोषसिद्धिदोषसिद्धिदोषसिद्धिदोषसिद्धिरदोषसिद्धिदोषसिद्धिदोषसिद्धि
 दोषसिद्धिकदोषसिद्धिदोषसिद्धिदोषसिद्धिदोषसिद्धि,दोषसिद्धि
 दोषसिद्धिकदोषसिद्धिदोषसिद्धिसदोषसिद्धिदोषसिद्धि दोषसिद्धिभदोषसिद्धिदोषसिद्धि
 दोषसिद्धितदोषसिद्धिरदोषसिद्धिदोषसिद्धि दोषसिद्धिसदोषसिद्धिदोषसिद्धि,दोषसिद्धि
 दोषसिद्धिदोषसिद्धिसदोषसिद्धि
 दोषसिद्धिनदोषसिद्धिदोषसिद्धिदोषसिद्धिदोषसिद्धिदोषसिद्धिदोषसिद्धिलदोषसिद्धिदोषसिद्धि
 सिद्धि दोषसिद्धिकदोषसिद्धिदोषसिद्धि
 दोषसिद्धिखदोषसिद्धिदोषसिद्धिलदोषसिद्धिदोषसिद्धिदोषसिद्धिदोषसिद्धि
 दोषसिद्धिवदोषसिद्धिदोषसिद्धिदोषसिद्धिदोषसिद्धिदोषसिद्धिरदोषसिद्धिदोषसिद्धिदोषसिद्धि
 दोषसिद्धिनदोषसिद्धिदोषसिद्धिदोषसिद्धिदोषसिद्धिदोषसिद्धि
 दोषसिद्धिकदोषसिद्धिरदोषसिद्धितदोषसिद्धिदोषसिद्धि
 दोषसिद्धिदोषसिद्धिदोषसिद्धि,दोषसिद्धि दोषसिद्धिजदोषसिद्धिदोषसिद्धि
 दोषसिद्धिउदोषसिद्धिचदोषसिद्धिदोषसिद्धितदोषसिद्धि
 दोषसिद्धिसदोषसिद्धिदोषसिद्धिदोषसिद्धिदोषसिद्धिदोषसिद्धिदोषसिद्धि
 दोषसिद्धिउदोषसिद्धितदोषसिद्धिदोषसिद्धिदोषसिद्धिदोषसिद्धिदोषसिद्धिदोषसिद्धि
 दोषसिद्धिदोषसिद्धिदोषसिद्धितदोषसिद्धिदोषसिद्धि दोषसिद्धिदोषसिद्धिदोषसिद्धि-
 दोषसिद्धिदोषसिद्धिदोषसिद्धिदोषसिद्धिलदोषसिद्धि दोषसिद्धिकदोषसिद्धिदोषसिद्धि
 दोषसिद्धिदोषसिद्धिनदोषसिद्धिदोषसिद्धिमदोषसिद्धितदोषसिद्धिदोषसिद्धि
 दोषसिद्धिदोषसिद्धिदोषसिद्धितदोषसिद्धिदोषसिद्धि दोषसिद्धिदोषसिद्धिदोषसिद्धि।
 दोषसिद्धि[पैरा 13 और 17]

आपराधिक न्याय का प्रशासन-अभियोजन पक्ष द्वारा प्रस्तुत संस्करण के बारे में उचित संदेह:

1135

1136

सर्वोच्च न्यायालय की रिपोर्ट

[2023] 11 एस सी आर।

आयोजित किया गया:जब इस न्यायालय को ऐसी स्थिति का सामना करना पड़ता है जहां उसे
 अभियोजन द्वारा प्रस्तुत किए गए संस्करण के बारे में उचित संदेह के बावजूद अभियोजन या
 बचाव पक्ष के साथ झुकना है या नहीं, इस पर विचार करना पड़ता है, तो यह न्यायालय,
 निश्चित रूप से और पसंद के मामले के रूप में, न्यायिक विवेकाधिकार के अनुरूप, बचाव पक्ष
 के पक्ष में झुक जाएगा-जीवन और स्वतंत्रता के मामले को तुच्छ नहीं माना जाना चाहिए, और
 दोषसिद्धि को केवल उचित संदेह के अभाव में बनाए रखा जा सकता है-अभियुक्त के पक्ष में
 निर्दोषता का अनुमान और अभियोजन पर अपने मामले को उचित संदेह से परे साबित करने

का आग्रह रिक्त औपचारिकताएं नहीं हैं-बल्कि, उनका मूल भारत के संविधान के अनुच्छेद 21 और 14 से पता चलता है-निर्दोषता का अनुमान एक मानव अधिकार है।[पैरा 18 और 20]

शहरों और
अन्य संदर्भों
की सूची

फिरोजुद्दीन बशीरुद्दीन बनाम केरल राज्य (2001) 7 एस. सी. सी. 596-आयोजित
अप्रयोज्य।

उत्तर प्रदेश राज्य बनाम कृष्ण गोपाल (1988) 4 एस. सी. सी.[1988] 2 पूरकाएस. सी.
आर. 391; संजय दुबे बनाम मध्य प्रदेश राज्य 2023 एस. सी. सी. ऑनलाइन एस. सी.
610; नरेंद्र सिंह बनाम मध्य प्रदेश राज्य (2004) 10 एस. सी. सी. 699:[2004] 3
एस. सी. आर. 1148; रणजीतसिंह ब्रह्मजीतसिंह शर्मा बनाम.

महाराष्ट्र राज्य (2005) 5 एस. सी. सी. 295:[2005] 3 एस. सी. आर. 345; गुडीकांती
नरसिम्हलु बनाम लोक अभियोजक, आंध्र प्रदेश उच्च न्यायालय, (1978)

1 एससीसी 240:[1978] 2 एस. सी. आर. 371-पर निर्भर।

नूर मोहम्मद मोहम्मदायूसुफ मोमीन बनाम महाराष्ट्र राज्य ए. आई. आर. 1971 एस. सी.
885:[1971] 1 एस. सी. आर. 119; मध्य प्रदेश राज्य बनाम धारकोल,

(2004) 13 एससीसी 308:[2004] 5 पूरकाएस. सी. आर. 780-संदर्भित।कॉफी एन
बनाम संयुक्त राज्य अमेरिका, 156 यू. एस. 432 (1895)-संदर्भित।

अन्य मामलों के विवरणों में आयातित आदेश और आवेदन शामिल हैं

आपराधिक अपील न्यायनिर्णय:2010 की आपराधिक अपील No.1541।

2003 के सी. आर. एल. ए. No.50 में बॉम्बे उच्च न्यायालय के दिनांकित 05.11.2009
के निर्णय और आदेश से।

1137

सुरेश थिपम्पा शेटी बनाम महाराष्ट्र राज्य 1138

के साथ

2011 की आपराधिक अपील सं. 2346।

रूप:

विनय नवरे, वरिष्ठ अधिवक्ता, पी. आर. राजहंस, अमरनाथ गुप्ता, जयंत कुमार, जन्मेजय वर्मा, सुश्री हरदिका, विशाल अरुण, डॉ. सुशील बलवाड़ा, कौशल यादव, नंदलाल कुमार मिश्रा, श्रीलोक नाथ रथ, सुश्री रीना राव, कश्यप कुमार द्विवेदी, अधिवक्ता।अपीलार्थी के लिए।

राहुल चिटनिस, सिद्धार्थ धर्माधिकारी, आदित्य अनिरुद्ध पांडे, भरत बागला, सौरव सिंह, आदित्य कृष्णा, एड.प्रत्यर्थी के लिए।

सर्वोच्च
न्यायालय का
निर्णय/आदेश

न्यायाधीश अहसानउद्दीन अमानुल्लाह, जे.

पक्षकारों की विद्वान विद्वान अधिवक्ता सुनी।

2. ये अपीलें क्रमशः 2003 की आपराधिक अपील संख्या 50 (अभियुक्त संख्या 4/ए 4-सुरेश थिपमप्पा शेटी) और 2003 की 522 (अभियुक्त संख्या 2/ए 2-सदाशिव सीना सालियन) में बॉम्बे में उच्च न्यायालय की एक खंड पीठ द्वारा पारित सामान्य अंतिम निर्णय और आदेश (जिसे इसके बाद "विवादित निर्णय" के रूप में संदर्भित किया गया है) के खिलाफ निर्देशित की गई हैं, जिसके तहत उच्च न्यायालय ने अपीलार्थीगण के नेतृत्व में दायर अपीलों को खारिज कर दिया और सत्र न्यायालय द्वारा पारित दोषसिद्धि आदेश (आदेशों) को बरकरार रखा। अभियुक्त सं. 3/ए 3 (गणेश उर्फ अन्नु शिवराम शेटी, जिनका बाद में निधन हो गया) द्वारा 4 सह-अभियुक्तों अर्थात ए 1, ए 5, ए 6 और ए 7 (2003 की आपराधिक अपील सं. 496) को बरी करने के साथ-साथ 2003 की आपराधिक अपील सं. 86 के खिलाफ राज्य की अपील को विवादित निर्णय द्वारा खारिज कर दिया गया।

वास्तविक प्रिज्म:

3. संक्षेप में कहें तो कहानी का प्रासंगिक विवरण इस प्रकार है:

3.1 अभियोजन पक्ष का आरोप है कि मूल आरोपी ए 1, ए 2 और ए 7 कोलाबा पुलिस स्टेशन लॉकअप में 23.09.1994 से 29.09.1994 तक थे। आरोप यह है कि उन्होंने दोनों के बीच आपराधिक साजिश रची

सर्वोच्च न्यायालय की रिपोर्ट

[2023] 11 एस सी आर।

महेंद्र प्रताप सिंह (इसके बाद "मृतक" के रूप में संदर्भित) का अपहरण और हत्या करने के लिए 23.09.1994 से 12.05.1995 तक की अवधि।

3.2 12.05.1995 यह दुर्भाग्यपूर्ण दिन बन गया। शारदा प्रसाद सिंह नामक एक व्यापारी के बारे में कहा जाता है कि वह पेट्रोलियम व्यवसाय में है। उनका कार्यालय एक्सप्रेस राजमार्ग पर क्षेत्रीय परिवहन कार्यालय घाटकोपर के पास स्थित था। उनके पांच बेटे हैं। वे संयुक्त रूप से व्यवसाय कर रहे थे। उक्त शारदा प्रसाद सिंह के बेटों में से एक मृतक था। अभियोजन पक्ष का कहना है कि ए 1 और ए 7, जो असली भाई हैं, सरोज पेट्रो केमिकल्स लिमिटेड के साथ-साथ एक परिवहन व्यवसाय भी चलाते हैं, की मृतक के साथ व्यावसायिक प्रतिद्वंद्विता थी और इस तरह उन्होंने उसके अपहरण और हत्या की साजिश रची। उनका प्रमुख कार्यालय चेंबूर में था और वे ठाणे में पतले और सॉल्वेंट्स का निर्माण करते थे।

3.3 पीडब्लू 2 एक रिक्शा चालक था। ए 2 ने जवाहरलाल नेहरू पोर्ट ट्रस्ट जाने के लिए अपना रिक्शा बुक किया। ए 2 और ए 3 होटल गार्डन में आए। उन्होंने पीडब्लू 2 को राजमार्ग पर रिक्शा ले जाने के लिए कहा। इसके बाद, उन्होंने दिशा बदल दी और नीचे उतर गए और मृतक की हत्या के लिए एक स्थान चुना और होटल लौट आए।

3.4 12.05.1995 पर, हमेशा की तरह PW1 उनके व्यवसाय में था। शाम करीब 6 बजे मृतक ने उसे बताया कि बेंगलोर से एक व्यक्ति पैसे के साथ आने वाला है और वे नवी मुंबई जाएंगे। फिर, दोनों मृतक द्वारा चलाए गए एक मारुति 1000 वाहन में शाम करीब 7:30 बजे होटल गार्डन, पनवेल पहुंचे। उन्होंने अपनी गाड़ी पार्किंग में खड़ी कर दी। रिसेप्शनिस्ट से पूछताछ करने के बाद, वे पहली मंजिल पर गए और कमरा संख्या 106 में प्रवेश किया, जहाँ ए 3 अंदर था। मृतक द्वारा पूछताछ करने पर, ए 3 ने बताया कि एयर-कंडीशनर काम नहीं कर रहा था, इसलिए सेठजी (वह व्यक्ति जिससे मृतक मिलने आया था) होटल वेलकम गया था। इसके बाद ए 3 ने सेठजी से टेलीफोन/इंटरकॉम से संपर्क करने की कोशिश की, लेकिन ऐसा नहीं हो सका।

3.5 फिर ए 3 सेठजी को बुलाने के लिए कमरे से बाहर चला गया। लगभग 5 मिनट के बाद, वह वापस आया और बताया कि सेठजी होटल गार्डन में ही आने वाले हैं। इसके बाद, फरार हमलावर/शूटर आया और बताया कि सेठजी फार्महाउस गया था और मृतक और अन्य लोगों को वहां बुलाया गया था। 4 लोग मारुति 1000 में चढ़ गए, (1) मृतक; (2) पीडब्लू 1; (3) हमलावर/शूटर, और (4) ए 3, और फार्महाउस की ओर बढ़े। ए 3 और शूटर/हमलावर ने मृतक द्वारा चलाई जा रही कार को एक स्थान पर रोक दिया, बाहर निकला और बाद में ए 3 और हमलावर/शूटर फिर से कार में वापस आ गए और शूटर/हमलावर ने मृतक को मार डाला।

3.6 यह आरोप लगाया जाता है कि ए 2 ने एक ट्रैवल एजेंसी से पनवेल जाने के लिए पहले ही एक मारुति वैन बुक कर ली थी। इसके अलावा, ए 4, ए 3 और ए 2 पी. डब्ल्यू. 7 द्वारा संचालित मारुति वैन में होटल गार्डन के लिए आगे बढ़े।

3.7 आरोप है कि ए 4 ने घटना से पहले 2 अन्य लोगों के साथ रिक्शा किराए पर लेकर घटना स्थल का दौरा किया था। पीडब्लू 3 (रंजन शंकर बेहरा, होटल रिसेप्शनिस्ट) ने होटल के कमरे में ए 3 और ए 2 के साथ ए 4 की पहचान की है। 3.8 प्रथम सूचना रिपोर्ट, अर्थात् अपराध सं. 132/1995, 13.05.1995 पर दर्ज की गई थी। अनुसंधान शुरू हुई और 10 व्यक्तियों के खिलाफ आरोप पत्र में समाप्त हुई-3 को आरोपमुक्त कर दिया गया और 7 पर मुकदमा चलाया गया। सत्र न्यायालय द्वारा 27.11.2002 पर दी गई आरोपित दोषसिद्धि का सारणीबद्ध सारांश उपयुक्त है:

एस. एल. नहीं।	पोजीशन	के तहत दोषी ठहराया गया	सजा।
1	ए 4	भारतीय दंड संहिता, 1860 की धारा 120-बी के तहत धारा 301	आजीवन कारावास 2 और 50,000 रुपये का जुर्माना (चूक में 1 वर्ष का आर. आई.)
2	ए 2		
धारा 120-बी, भारतीय दण्ड संहिता	5 वर्षों का आर. आई. और आई. एन. आर. 50,000 जुर्माना (चूक में 1 वर्ष का आर. आई.)		
भारतीय दण्ड संहिता सी. की धारा 120-बी के तहत धारा 302	जीवन के लिए आर. आई. और आई. एन. आर. 50,000 जुर्माना (डिफॉल्ट रूप से 1 वर्ष का आर. आई.)		

4. सत्र न्यायालय द्वारा दिए गए दिनांक 1 के आदेश से व्यथित, वर्तमान अपीलार्थीगण (ए 4 और ए 2), ए 3 और महाराष्ट्र राज्य ने उच्च न्यायालय के समक्ष अलग-अलग अपीलों को प्राथमिकता दी। जैसा कि ऊपर उल्लेख किया गया है, विवादित निर्णय ने सभी अपीलों को खारिज कर दिया। इस बीच, ए 3 का निधन हो गया। पीड़ित, अब विवादित निर्णय के कारण, अपीलार्थीगण ने इस न्यायालय के समक्ष तत्काल अपीलों को प्राथमिकता दी है।

अपीलार्थियों द्वारा प्रस्तुतियाँ:

5. अपीलार्थीगण के विद्वान अधिवक्ता के अनुसार, अभियोजन पक्ष की कहानी और गवाहों के अनुसार, वे (ए 4 और ए 2) वे दो व्यक्ति नहीं थे जो मृतक के साथ कार में थे, जिसमें अंततः उसे गोली मार दी गई थी और इस प्रकार, साजिश के सिद्धांत के साबित होने पर ही उन्हें दोषी ठहराया जा सकता था। विद्वान अधिवक्ता ने प्रस्तुत किया कि वर्तमान मामले में, श्रृंखला

1 इसके बाद इसे आई. पी. सी. के रूप में संदर्भित किया गया है। 2 इसके बाद "आर. आई". के रूप में संदर्भित किया जाता है।

सर्वोच्च न्यायालय की रिपोर्ट

[2023] 11 एस सी आर।

घटनाओं की संख्या कोई साजिश नहीं दिखाती है क्योंकि मुख्य आरोपी ए 1 और ए 7 थे, जो भाई थे, और जिनके बारे में कहा जाता था कि वे मृतक के साथ प्रतिद्वंद्विता में थे, उन्होंने योजना बनाई थी। उन्होंने मृतक को खत्म करने के लिए अन्य/शेष अभियुक्तों को काम पर रखा। आगे यह तर्क दिया गया कि मृतक के चाचा की शिकायत के अनुसार, जिनके बारे में कहा जाता है कि वे कार में उनके साथ थे, दो आरोपी जो मृतक को सेठजी से मिलने ले जाने के बहाने कार में पीछे बैठे थे, जिन्होंने मृतक के साथ कुछ व्यावसायिक सौदा किया था, उक्त दो सह-अभियुक्तों में से एक ने कार में मृतक को गोली मारने के बाद, शिकायतकर्ता/पीडब्लू 1 (चंद्रभान सिंह श्रीनाथ सिंह) को उस स्थान से भागने का आदेश दिया गया था (जो उसने किया था), ऐसा न करने पर उसे गोली मार दी जाएगी।

6. हालाँकि, विद्वान अधिवक्ता ने बताया कि उसका आचरण विश्वास को प्रेरित नहीं करता है क्योंकि वह निकटतम पुलिस स्टेशन नहीं गया था, बल्कि कहा जाता है कि वह एक भरतभाई शाह के आवास पर गया था, जो वहाँ नहीं था, लेकिन उसका बहनोई मौजूद था, जो उसके साथ मृतक के घर गया था, जहाँ उसके परिवार के सदस्यों को सूचित किया गया था और जब वे घटना स्थल पर पहुंचे, तो उन्होंने पाया कि पुलिस पहले ही मौके पर पहुँच चुकी थी। एक अन्य पहलू, जिसे अपीलार्थीगण के विद्वान अधिवक्ता ने इंगित किया, यह था कि यह सामान्य मानव व्यवहार के खिलाफ है कि एक व्यक्ति इस तरह के गंभीर अपराध को करने के बाद एक चश्मदीद गवाह को जीवित छोड़ देगा, बाद में उजागर हो जाएगा और दोषी ठहराए जाने का जोखिम होगा, विशेष रूप से गंभीर दंडात्मक परिणामों के साथ अपराध के लिए।

7. विद्वान अधिवक्ता ने आग्रह किया कि अपीलार्थीगण को अपराध से जोड़ने के लिए बिल्कुल कोई सबूत उपलब्ध नहीं है क्योंकि पूरी अनुसंधान और मुकदमे के दौरान कोई भी संबंध सामने नहीं आया है क्योंकि अभियोजन पक्ष द्वारा किसी अन्य साजिश के सिद्धांत पर भी विचार नहीं किया गया है। यह आगे तर्क दिया गया कि एक बार तथाकथित मुख्य षड्यंत्रकारियों, जिनके इशारे पर हत्या हुई है, को बरी कर दिया गया है, अपीलार्थीगण के अपराध करने के किसी भी उद्देश्य का कोई सिद्धांत, बहुत कम सबूत नहीं है; मामले के किसी भी दृष्टिकोण में, उन्हें संदेह का लाभ दिए जाने की आवश्यकता थी। यह तर्क दिया गया कि घटना के छह महीने से अधिक समय के बाद पीडब्लू 7 (शिवशंकर मोंगलाल तिवारी) का सामने आना ही बयान में विश्वसनीयता के बारे में गंभीर संदेह पैदा करता है क्योंकि उन्होंने कहा है कि उन्होंने किसी के सामने अपराध की घटना के तथ्य का उल्लेख नहीं किया है, जो कि अत्यधिक असंभव है।

सुरेश थिपम्पा शेट्टी बनाम महाराष्ट्र राज्य [अहसनूद्दीन अमानुल्लाह, जे.] 1142

8. पी. डब्ल्यू. 7 की गवाही से संबंधित एक अन्य संकेतक, जैसा कि अपीलार्थीगण के विद्वान अधिवक्ता ने बताया है कि यदि घटना 8 बजे हुई थी: 15 पीएम, और उनके द्वारा सूक्ष्म विवरणों का खुलासा किया जा रहा है जब वे 150 फीट की दूरी पर थे, यह विश्वास करना स्पष्ट रूप से कठिन है। इसके अलावा, हथियार बरामद नहीं किया गया है और न ही पीडब्लू 1 द्वारा पहने गए कपड़ों का संग्रह है जो दर्शाता है कि उसके खून के धब्बे हैं, जब स्वीकार किया जाता है कि गोली लगने के बाद, मृतक की गर्दन उसके कंधे पर झुक गई थी, तो यह भी इंगित करता है कि उक्त गवाह मौके पर नहीं था और विद्वान अधिवक्ता के अनुसार, जहां तक अपीलार्थीगण का संबंध है, पूरी कहानी मनगढ़ंत है।

9. ए 2 के विद्वान अधिवक्ता ने आगे यह रख अपनाया कि बैंक खाते से कुछ धन और ए 2 की जमा राशि के बावजूद, उक्त धन को ए 1 और ए 7 से जोड़ने के लिए कुछ भी नहीं है, जिनके बारे में कहा जाता है कि वे मकसद से साजिश रचने में मास्टरमाइंड थे।

10. विद्वान अधिवक्ता ने संक्षेप में कहा कि एक ओर मृतक और दूसरी ओर ए 1 और ए 7 के बीच कथित प्रतिद्वंद्विता भी निचली अदालत के समक्ष साबित नहीं हुई, जिसके परिणामस्वरूप ए 1 और ए 7 को बरी कर दिया गया। 11. अपीलार्थीगण के विद्वान अधिवक्ता ने प्रस्तुत किया कि प्रतिपरीक्षा में, पीडब्लू 2 (विनायक शिवाजी सावंत) ने ए 4 की पहचान नहीं की है। पीडब्लू 2 यह भी स्वीकार करता है कि उसे कई मौकों पर ए 2 और ए 4 की तस्वीरें दिखाई गई थीं। यह भी तर्क दिया गया कि हमलावर/वास्तविक शूटर अभी भी फरार है और उसे गिरफ्तार नहीं किया गया है और केवल खामियों को छिपाने के लिए, पुलिस ने छह महीने बाद अपीलार्थीगण को किसी तरह फंसाने के लिए पीडब्लू 7 का गठन किया है। अपने बयान में, पीडब्लू 7 ने कहा है कि उसने पटाखे फोड़ते हुए सुना, जिसका अर्थ है कि कई आवाजें थीं, जबकि पीडब्लू 1 द्वारा एक स्पष्ट बयान दिया गया है, जो कार में था कि दो गोलियां एक छोटे से हथियार से लाल थीं और इस प्रकार, एक ही फाई रिंग से कई आवाजें नहीं हो सकती थीं, जो इंगित करता है कि यह एक छोटे से हथियार से नहीं हो सकती थी, जो बार-बार आवाज नहीं करती थी।

उत्तरदाता की प्रस्तुतियाँ:

12. इसके विपरीत, दोनों अपीलों में राज्य (एकमात्र प्रतिवादी) की ओर से उपस्थित विद्वान अधिवक्ता ने विवादित निर्णय का समर्थन किया। उन्होंने हमें हस्तक्षेप न करने के लिए मनाने की कोशिश की। उन्होंने कहा कि सत्र न्यायालय ने गवाहों की गवाही के आधार पर अपीलार्थीगण की भूमिका पर स्पष्ट रूप से चर्चा की है और अभियोजन पक्ष के गवाहों द्वारा उनकी पहचान भी की गई है। इस प्रकार यह हुआ कि

सर्वोच्च न्यायालय की रिपोर्ट

[2023] 11 एस सी आर।

तर्क दिया कि साजिश स्पष्ट रूप से साबित की गई थी। इसके अलावा, यह प्रस्तुत किया गया कि विवादित फैसले में अभियोजन पक्ष के गवाहों के बयान पर भी चर्चा की गई है, जिसमें विभिन्न होटलों के कक्ष सेवा कर्मी/होटल कर्मचारी शामिल हैं, जिन्होंने ए 2 को मान्यता दी है, जो आगे साबित करता है कि अपीलार्थीगण के बीच एक आपराधिक साजिश थी। यह तर्क दिया गया कि ए 2 के बैंक लेनदेन के बारे में गवाहों की गवाही के आधार पर भी चर्चा हुई थी। रिलायंस को विद्वान अधिवक्ता द्वारा निर्णय पर रखा गया था

फिरोजुद्दीन बशीरुद्दीन बनाम केरल राज्य, (2001) 7 एस. सी. सी. 596

यह प्रस्ताव कि षड्यंत्र को परिस्थितिजनक साक्ष्य के आधार पर भी साबित किया जा सकता है और यद्यपि यह एक विशिष्ट अपराध नहीं है, बल्कि इसके आधार पर, एक साजिशकर्ता को साजिश के उद्देश्य को आगे बढ़ाने के लिए सह-साजिशकर्ता द्वारा किए गए अपराध के लिए भी जिम्मेदार ठहराया जा सकता है।

विश्लेषण, कारण और निष्कर्ष:

13. उच्च न्यायालय ने 3-न्यायाधीशों की पीठ के फैसले पर भरोसा किया

नूर मोहम्मद मोहम्मदायूसुफ मोमीन बनाम महाराष्ट्र राज्य, ए. आई. आर. **1971**

एस. सी. **885** ने कहा कि 'आपराधिक साजिश को परिस्थिति से साबित किया जा सकता है

सबूत '3. नूर मोहम्मद मोहम्मद की सावधानीपूर्वक प्रशंसा पर।यूसुफ

मोमीन (ऊपर), जबकि उसमें निर्धारित कानून के साथ सहमति में, हम यह देखने में सक्षम नहीं हैं कि अभियोजन पक्ष के मामले को इसकी सहायता से कैसे मजबूत किया जाता है। नूर

मोहम्मद मोहम्मदायूसुफ मोमीन (ऊपर) किसी भी तरह से सैन्य कार्रवाई नहीं करता है।

इस न्यायालय के खिलाफ एक दोषसिद्धि को उलटना जब उचित संदेह उत्पन्न होता है।

14. उत्तर प्रदेश राज्य बनाम कृष्ण गोपाल, (1988) 4 एस. सी. सी.

न्यायालय ने कहा:

'25. इसमें कोई संदेह नहीं है कि किसी व्यक्ति को ऐसे अपराध के लिए दोषी नहीं ठहराए जाने का गहरा अधिकार है जो उचित संदेह से परे सबूत के प्रमाणिक मानक द्वारा साबित नहीं है। हालाँकि यह मानक एक उच्च मानक है, लेकिन कोई पूर्ण मानक नहीं है। प्रत्येक मामले के लिए एक विशेष अभ्यास यह है कि "प्रमाण" के लिए कितनी संभावना है। साक्ष्य की परस्पर निर्भरता और साक्ष्य के एक टुकड़े को दूसरे द्वारा स्वीकार करने का उल्लेख करते हुए

एक विद्वान लेखक कहते हैं [देखें]:“प्रमाण-॥ का गणित:ग्लैनविल विलियम्स:स्वीट और मैक्सवेल द्वारा आपराधिक कानून समीक्षा, 1979,पी. 340 (342)]:

3 विवादित निर्णय का अनुच्छेद 51।

1143

सुरेश थिपम्पा शेटी बनाम महाराष्ट्र राज्य [अहसनुद्दीन अमानुल्लाह, जे.] 1144

“सरल गुणन नियम तब लागू नहीं होता है जब साक्ष्य के अलग-अलग टुकड़े निर्भर होते हैं। दो घटनाएँ निर्भर करती हैं जब वे एक साथ होती हैं, और ऐसी घटनाओं के साक्ष्य को भी निर्भर कहा जा सकता है। एक आपराधिक मामले में, यह स्थापित करने के लिए निर्देशित साक्ष्य के विभिन्न टुकड़े कि प्रतिवादी ने मन की विशिष्ट मानसिक स्थिति के साथ निषिद्ध कार्य किया था, आम तौर पर निर्भर करते हैं। एक जूरर को संदेह हो सकता है कि क्या एक कथित स्वीकारोक्ति को श्रेय दिया जाए, और संदेह हो सकता है कि क्या इस तथ्य से अपराध का अनुमान लगाया जाए कि प्रतिवादी न्याय से वंचित है। लेकिन चूंकि यह आम तौर पर निर्दोष लोगों के बजाय दोषी है जो इकबालिया बयान देते हैं, और निर्दोष लोगों के भाग जाने के बजाय दोषी है, इसलिए दोनों संदेहों को एक साथ गुणा नहीं किया जाना चाहिए। साक्ष्य का एक टुकड़ा दूसरे को आश्वस्त कर सकता है।”

संदेह को उचित कहा जाएगा यदि वे अमूर्त अटकलों के उत्साह से मुक्त हैं। कानून सत्य के अलावा किसी और को पसंद नहीं कर सकता है। उचित संदेह का गठन करने के लिए, यह अति भावनात्मक प्रतिक्रिया से मुक्त होना चाहिए। केवल अस्पष्ट आशंकाओं के विपरीत, साक्ष्य से या इसकी कमी से उत्पन्न होने वाले अभियुक्त व्यक्ति के अपराध के बारे में संदेह वास्तविक और पर्याप्त संदेह होने चाहिए। एक उचित संदेह एक काल्पनिक, तुच्छ या केवल एक संभावित संदेह नहीं है; बल्कि तर्क और सामान्य ज्ञान पर आधारित एक उचित संदेह है। यह मामले में साक्ष्य से विकसित होना चाहिए।

26. संभाव्यता की अवधारणाओं और इसकी डिग्री को स्पष्ट रूप से गणितीय रूप से गणना की जाने वाली इकाइयों के संदर्भ में व्यक्त नहीं किया जा सकता है कि ऐसी कितनी इकाइयाँ उचित संदेह से परे प्रमाण का गठन करती हैं। संभाव्यता की डिग्री और प्रमाण की मात्रा के मूल्यांकन में एक अचूक व्यक्तिपरक तत्व है। फॉरेंसिक संभाव्यता, अंतिम विश्लेषण में, एक मजबूत सामान्य ज्ञान और अंततः, न्यायाधीश के प्रशिक्षित अंतर्ज्ञान पर निर्भर होनी चाहिए। जबकि अभियुक्त व्यक्तियों को आपराधिक प्रक्रिया द्वारा दिए गए संरक्षण को कम नहीं किया जाना चाहिए, साथ ही, तुच्छताओं का अनजान वैधता आपराधिक न्याय के प्रशासन का मजाक बनाएगी।’

(जोर दिया गया) 15. कृष्ण गोपाल (ऊपर) के सिद्धांत को राज्य में दोहराया गया था।

मध्य प्रदेश बनाम धारकोले, (2004) 13 एससीसी 308। ऊपर दिए गए गुंबद पर,

[2023] 11 एस सी आर।

अभियोजन पक्ष की कहानी विवादित दोषसिद्धि को बनाए रखने के लिए विश्वास को प्रेरित नहीं करती है।

16. जहां तक फिरोजुद्दीन बशीरुद्दीन (उपरोक्त) मामले में फैसले पर राज्य के विद्वान अधिवक्ता द्वारा रखी गई निर्भरता का संबंध है, यह न्यायालय केवल यह देखेगा कि वही एक अलग तथ्यात्मक परिदृश्य को समाहित करता है-उस मामले में मृतक की मृत्यु के लिए जिम्मेदार मुख्य व्यक्तियों को दोषी ठहराया गया था। हालांकि, वर्तमान मामले में अभियोजन पक्ष के मुख्य साजिशकर्ता बरी हो गए हैं। यह उक्त मामले और वर्तमान मामले के मूलभूत तथ्यों में एक स्पष्ट अंतर है। लेकिन यह सुरक्षित रूप से यह निष्कर्ष निकालने के लिए पर्याप्त है कि फिरोजुद्दीन बशीरुद्दीन (उपरोक्त) मामले में लागू नहीं होंगे।

हाथ में। हाल ही में, इस न्यायालय ने संजय दुबे बनाम मध्य प्रदेश राज्य मामले में,

2023 आई. एन. एस. सी. 519 4 ने उस स्थिति को दोहराया जो अब रेस इंटीग्रा नहीं है:

‘18.... यह बहुत अच्छी तरह से तय किया गया है कि निर्णयों को यूक्लिड के प्रमेयों के रूप में नहीं पढ़ा जाना चाहिए; उन्हें कानून के रूप में नहीं माना जाना चाहिए, और; विशिष्ट मामले केवल उसी के लिए अधिकारी हैं जो वे वास्तव में तय करते हैं। हम प्रासंगिक अनुच्छेदों को पुनः प्रस्तुत करने में मौखिक नहीं होना चाहते हैं, लेकिन इस मुद्दे पर कुछ अधिकारियों को इंगित करना उचित समझते हैं-श्रीनिवास जनरल ट्रेडर्स

v आंध्र प्रदेश राज्य, **(1983) 4 एस. सी. सी. 353** और मैसर्स अमर नाथ ओम प्रकाश बनाम पंजाब राज्य, **(1985) 1 एस. सी. सी. 345**-जिसे अन्य बातों के साथ-साथ, बी. जी. एस. एस. जी. एस. सोमा जे. वी. बनाम एन. एच. पी. सी. लिमिटेड, **(2020) 4 एस. सी. सी. 234**, और चिंटेल्स इंडिया लिमिटेड बनाम भयाना बिल्डर्स प्राइवेट लिमिटेड, **(2021) 4 एस. सी. सी. 602** में दोहराया गया है।’

17. तथ्यों और लागू कानून की जांच सहित मामले पर विस्तार से विचार करने के बाद, हमारा स्पष्ट विचार है कि पर्याप्त सामग्री रिकॉर्ड पर उपलब्ध है, जो मुकदमे के दौरान सामने आई है, जिससे अपराध में अपीलार्थीगण की संलिप्तता के बारे में उचित संदेह पैदा होता है। अपीलार्थीगण पी. डब्ल्यू. 1, पी. डब्ल्यू. 2 और पी. डब्ल्यू. 7 की गवाही में छेद करने में सक्षम रहे हैं। हमारा निष्कर्ष यह है कि ए 1 और ए 7 को बरी कर दिया गया है और इस प्रकार, साजिश के कोण से कथित मुख्य साजिशकर्ता, जो अभियोजन पक्ष के अनुसार मास्टरमाइंड हैं, को उचित संदेह से परे साबित नहीं किया जा सकता है। इसके अलावा, अभियोजन पक्ष द्वारा कोई वैकल्पिक सिद्धांत या साजिश का सुझाव भी नहीं दिया गया है, जो बहुत कम साबित हुआ है। निर्विवाद रूप से, दुर्भाग्यपूर्ण तिथि पर कार में चार व्यक्ति थे (1)

सुरेश थिपम्पा शेटी बनाम महाराष्ट्र राज्य [अहसनुद्दीन अमानुल्लाह, जे.] 1146

मृतक; (2) पीडब्लू1; (3) हमलावर/शूटर, जो फरार है, और (4) ए 3। इस स्वीकार की गई स्थिति की पृष्ठभूमि में कि अपीलार्थीगण उस स्थान पर मौजूद नहीं थे जहां अपराध किया गया था, यानी कार में और न ही अपराध करने में उनकी कोई प्रत्यक्ष/विशिष्ट भूमिका के लिए उन्हें जिम्मेदार ठहराया जा रहा है, उनकी दोषसिद्धि को बरकरार नहीं रखा जा सकता है।

18. गहन और मौलिक स्तर पर, जब इस न्यायालय को ऐसी स्थिति का सामना करना पड़ता है जहां उसे इस बात पर विचार करना पड़ता है कि अभियोजन द्वारा प्रस्तुत किए गए संस्करण के बारे में उचित संदेह के बावजूद अभियोजन या बचाव पक्ष के साथ झुकना है या नहीं, तो यह न्यायालय न्यायिक विवेकाधिकार 5 के अनुरूप, निश्चित रूप से और पसंद के मामले के रूप में बचाव पक्ष के पक्ष में झुक जाएगा। हमने इस मूल सिद्धांत को ध्यान में रखा है कि जीवन और स्वतंत्रता को तुच्छ नहीं दोषसिद्धि जाना चाहिए, और एक दृढ़ विश्वास केवल उचित संदेह के अभाव में ही बनाए रखा जा सकता है। अभियुक्त के पक्ष में निर्दोष होने का अनुमान और अभियोजन पक्ष पर अपने मामले को उचित संदेह से परे साबित करने का आग्रह खाली औपचारिकताएं नहीं हैं। बल्कि, उनकी उत्पत्ति का पता भारत के संविधान के अनुच्छेद 21 और 14 से लगाया जा सकता है। बेशक, कुछ मामलों के लिए, कानून आरोपी पर अपनी बेगुनाही साबित करने के लिए एक विपरीत जिम्मेदारी डालना चाहता है, लेकिन यह अन्य आपराधिक मामलों के लिए निर्दोष-सिद्ध-दोषी नियम पर प्रतिकूल प्रभाव नहीं डालता है।

19. कॉफ़ी एन बनाम संयुक्त राज्य अमेरिका, 156 यू. एस. 432 (1895) में, संयुक्त राज्य अमेरिका के सर्वोच्च न्यायालय ने निर्णय दिया:

‘यह सिद्धांत कि अभियुक्त के पक्ष में निर्दोषता की धारणा है, निर्विवाद रूप से स्वयंसिद्ध और प्राथमिक कानून है, और इसका प्रवर्तन हमारे आपराधिक कानून के प्रशासन की नींव पर निहित है।’

20. हम पूर्व-उल्लिखित कथन के साथ कोई विवाद नहीं देखते हैं क्योंकि यह हमारी आपराधिक न्याय प्रणाली के सभी पहलुओं पर लागू होता है। नरेंद्र के कथन के अनुसार, निर्दोष होने का अनुमान भी एक मानव अधिकार है।

सिंह बनाम मध्य प्रदेश राज्य, (2004) 10 एससीसी 699। रणजीतसिंह ब्रह्मजीतसिंह शर्मा बनाम महाराष्ट्र राज्य, (2005) 5 एस. सी. सी. में

5 यद्यपि जमानत न्यायशास्त्र के संदर्भ में, 'न्यायिक विवेकाधिकार' में क्या निहित है, इस बारे में एक कार्यशील विचार के लिए, एक विद्वान एकल न्यायाधीश (न्यायाधीश-इन-जज के रूप में बैठे) के विचारों को पढ़ें।

चेम्बर्स) इस न्यायालय के गुडीकांती नरसिम्हलु बनाम लोक अभियोजक, आंध्र प्रदेश उच्च न्यायालय, (1978) 1 एस. सी. सी. 240 में।

सर्वोच्च न्यायालय की रिपोर्ट

[2023] 11 एस सी आर।

3-इस न्यायालय की न्यायाधीश पीठ ने पैराग्राफ 35 में राय दी थी कि '।

किसी व्यक्ति के मामले में आम तौर पर तब तक हस्तक्षेप नहीं किया जाना चाहिए जब तक कि इसके लिए ठोस आधार मौजूद न हों।...'

21. तदनुसार, उपरोक्त कारणों से, इन अपीलों की अनुमति दी जाती है।अपीलार्थीगण को उनके जमानत बांड की देनदारियों से मुक्त कर दिया जाता है।यदि सत्र न्यायालय या उच्च न्यायालय के आदेशों के अनुसार कोई भी आवेदन किसी भी अपीलार्थी द्वारा जमा किया गया था/प्राप्त किया गया था, तो वे उसी की वापसी के हकदार होंगे।

द्वारा तैयार किए गए हेडनोट:

अपीलों की अनुमति दी गई।

दिव्या पांडे